राँची विश्वविद्यालय के 23वें दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री सैय्यद सिब्ते रज़ी का अध्यक्षीय भाषण

दिनांक 18 अप्रैल, 2007

राँची विश्वविद्यालय के 23वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री अर्जुन सिंह जी, राज्य के मुख्यमंत्री, श्री मधु कोड़ा जी, शिक्षा मंत्री श्री बंधु तिर्की जी, राज्य के माननीय मंत्रीगण, माननीय सांसद एवं विधायकगण, कुलपति डॉ. ए.ए. खान, प्रतिकुलपति डॉ. सलिल कुमार राय, कुलसचिव डा0 एल. एन. भगत, उपस्थित शिक्षाविद्, केन्द्र एवं राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारी, रॉची विश्वविद्यालय के सभी प्राचार्य एवं शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मी, अभिभावकगण, उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थीगण, प्रेस एवं मीडिया के बंधुओं ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 ए. ए. खान द्वारा विश्वविद्यालय की ओर से आप सभी का स्वागत किया गया है किन्तु कुलाधिपति के रूप में मैं भी आप सब का एवं विशेष रूप से, माननीय श्री अर्जुन सिंह जी का, राँची विश्वविद्यालय के इस दीक्षान्त समारोह में हार्दिक स्वागत करता हूँ। आज के इस दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री अर्जुन सिंह जी का आगमन निश्चित रूप से सम्पूर्ण विश्वविद्यालय के लिए एवं कुलाधिपति के रूप में मेरे लिए, हर्ष एवं गौरव का विषय है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि हमारे मुख्य अतिथि माननीय श्री अर्जुन सिंह जी का 50 वर्षों से अधिक का संसदीय जीवन है। ये वर्ष 1957 से वर्ष 1985 तक मध्यप्रदेश राज्य के विधानसभा के सदस्य रहे एवं उस दौरान मध्यप्रदेश राज्य के विभिन्न मंत्रालयों में मंत्री के रूप में इन्होंने अपनी पहचान बनाई।

मैं विशेषरूप से उल्लेख करना चाहूँगा कि वर्ष 1972 से 1977 के बीच में ये मध्यप्रदेश राज्य के शिक्षा मंत्री भी रहे। इस दौरान इन्होंने राज्य की शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाने हेतु अनेक नयी योजनाएँ प्रारंभ की। आप वर्ष 1980 से 1985 तक तथा पुनः वर्ष 1998 से 1999 तक मध्यप्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री भी रहे। आपके कुशल प्रशासनिक अनुभव का ही यह परिणाम था कि वर्ष 1985 मे आपको पंजाब राज्य के महामहिम राज्यपाल के रूप में जिम्मेदारी तब सौंपी गयी जब वह राज्य उग्रवादी हिंसा की चपेट में था। माननीय श्री अर्जुन सिंह जी वर्ष 1991 से 1994 तक केन्द्र सरकार के माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री भी रहे एवं पुनः 22 मई, 2004 को इन्हें मानव संसाधन विकास विभाग का गुरूतर उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इन्हीं वर्षों में मुझे कापीराईट एक्ट के संशोधन विधेयक पर संयुक्त संसदीय प्रवर समिति के अध्यक्ष के रूप में इनके सानिध्य में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आप देश के बाहर यूनेस्को के 26वें सामान्य सम्मेलन एवं जिनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर चुके हैं। मैं अगर अपने माननीय मुख्य अतिथि की सम्पूर्ण जीवनी को विस्तार से बताऊँ तो इनकी इतनी उपलब्धियाँ है कि संभवतः मेरे अभिभाषण का पूरा समय उसी में लग जाये, किन्तु मैं संक्षेप में आपको याद दिलाना चाहूँगा कि माननीय श्री अर्जुन सिंह जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश वह पहला राज्य था जिसमें शहरी बस्तियों में रहनेवाले गरीबों को पट्टे देने की योजना प्रारंभ की गयी और शहरी क्षेत्र के गरीब विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रशिक्षण एवं

नियोजन का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। श्री अर्जुन सिंह जी के मुख्यमंत्रित्व काल में ही चंबल के डकैतों के आत्मसमर्पण का कार्य संपन्न हुआ और इनके प्रयासों द्वारा ही हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री, स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी एवं संत लोंगोवाल के बीच पंजाब समस्या पर ऐतिहासिक समझौता हुआ जो उस राज्य में शांति का वातावरण तैयार करने में मील का पत्थर साबित हुआ। मुझे यह बताते हुए हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि जब मैंने दिल्ली में इनसे भेंट कर राँची विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि बनने का आग्रह किया तो अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद इन्होंने नवसृजित राज्य झारखण्ड चलने पर अपनी स्वीकृति तुरंत प्रदान की। आज इनके प्रभावशाली एवं संवेदनशील अभिभाषण को आपने सुना और मैं समझता हूँ कि इससे आज निश्चित रूप से हमारे सम्पूर्ण विश्वविद्यालय ही नहीं, अपितु पूरे राज्य के शिक्षा जगत में एक नया संदेश समाज के बीच जायेगा।

झारखण्ड राज्य प्राकृतिक और खनिज संपदा से भरपूर है। यहाँ की हवाओं में संगीत है और यहाँ के नदी–झरनों में जीवन और गति की एक सुन्दर लय है। ऐसा प्राकृतिक परिवेश बहुत कम राज्यों में है। इस प्रदेश की अपनी कला–संस्कृति है। प्रकृति ने इसे अनुपम सौन्दर्य और समृद्धता प्रदान की है। हमें अपनी बौद्धिक संपदा से इसे और अधिक सुन्दर–समृद्ध बनाना है। बिना बौद्धिक संपदा के प्राकृतिक और खनिज संपदा का समुचित उपयोग नहीं हो सकता। पृथ्वी के गर्भ में जो अपार संपदा है, उसे जानने और समझने के साथ ही उसका बेहतर उपयोग करने

के लिए भी ज्ञान की जरूरत है। विश्वविद्यालय की बड़ी भूमिका इस अर्थ में है कि वह ज्ञान और सूचना के विशाल भंडार से सुपरिचित होते हुए उसमें कितना नया और सार्थक जोड़ पाता है। विश्वविद्यालय के संबंध में बेंजामिन डिजरायली का यह कथन हमें याद रखना होगा –" **A University should be a place of light of liberty and of learning"** यह ज्ञान ही है, जो हमें स्वतंत्र और प्रकाशमान करता है।

आज का दौर भूमंडलीकरण (ग्लोबलाइजेशन) का है। भूमंडलीकरण के इस बदलते दौर में बहुत सारी चीजें बदल रही है। विश्व का शैक्षिक परिदृश्य (**Educational Scenerio**) भी बदल रहा है। आज पहले से कहीं अधिक स्थानीय, राष्ट्रीय और विश्व (**Local, National & Global**) के बीच तालमेल बिठाने की जरूरत है। आज का समय सूचना प्रधान और अर्थ प्रधान है, जिसके पास सूचना और ज्ञान है, उसके पास अर्थ है। आज सूचना और ज्ञान की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। एल्विन टाफ्लर ने अपनी पुस्तक 'पावर शिफ्ट' में जिन तीन नये बिन्दुओं की बात कही है, उनमें एक बुद्धि (**Mind**) है। हमें अपनी पुरानी विचारधारा को बदलना होगा। पुरानी लीक पर चलते रहने और लीक पीटते रहने से हम बहुत कुछ हासिल नहीं कर सकते। आज सूचना और ज्ञान सबसे बड़ी शक्ति है। 1990 में जब वर्ल्ड वाइड वेब (**WWW**) का आविष्कार दो अनुसंधानकर्त्ताओं–टिम बर्नर और ली ने किया था, तब सूचना प्रस्तुति के एक नये तरीके से हमारा परिचय हुआ था। अब वेब की अपनी दुनिया बन चुकी

है। आज का उद्योग–जगत पहले से भिन्न है। यह सूचना उद्योग, सूचना विस्फोट और सूचना साम्राज्य का युग है। सूचना तंत्र, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल आदि से आँखे मूंदकर हम आगे नहीं बढ़ सकते। पांच सौ वर्ष पहले छापाखाने ने संचार व्यवस्था में कांतिकारी बदलाव ला दिया था। डेढ़ सौ साल पहले कैमरे और फिल्म ने, पचास साल पहले पिक्चर टयूब और दृश्य–श्रव्य (Visual Audio) के माध्यम ने और तीस साल पहले ग्लोबल सैटलाइट ने पुरानी चीजों को बदल दिया है। हमारे सामने इन सब का इतिहास है और समय की बदलती रफ्तार के साथ हमें अपने में बदलाव लाना होगा, अपने को बदलना होगा।

हम अभी कृषि प्रधान समाज में हैं। कृषि समाज, औद्योगिक समाज और तकनीकी समाज में अंतर है। हमारा समाज अब तक तकनीकी समाज नहीं बन सका है। कृषि समाज से अपने समाज को तकनीकी समाज में बदलने का मुख्य दायित्व उस युवावर्ग पर है, जिसने विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की है। केवल छात्रो/छात्राओं को ही नहीं, अपितु कॉलेजों और विश्वविद्यालय के अध्यापकों को भी आज के बदलते समय में अपनी भूमिका समझनी होगी और उत्साह तथा संकल्प से नये दायित्व लेने होंगे। हमें तेज और सक्रिय दिमाग से आगे बढ़ना होगा। तकनीकी कांति हो चुकी है और यदि हम नयी तकनीक की उपेक्षा करेंगे तो हम पिछड़ जायेंगे। नयी तकनीक के लिए नयी उर्जा चाहिए, नया सोच–विचार और इसके लिए विश्वविद्यालय ही सबसे उपयुक्त जगह है। विकासशील देश को विकसित देश बनाने की जिम्मेवारी विश्वविद्यालय की युवा और मेधावी शक्ति

की है। विश्वविद्यालय को अब तेज रफ्तार में शामिल होना होगा, ताकि हम पीछे न रह जाये। इसके लिए हमें नये पाठ्यक्रम बनाने होंगे और व्यवसायिक पाठ्यक्रमों पर विशेष ध्यान देना होगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम पारंपरिक पाठ्यक्रमों को समाप्त कर दें बल्कि हमें उसमें समय के अनुकूल बदलाव लाना होगा।

आज विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए। शिक्षा का क्षेत्र आज अनेक चुनौतियों से भरा हुआ है। हम ऐसे शैक्षिक परिवेश का निर्माण करना चाहते हैं, जो एक साथ छात्रों—अध्यापकों के लिए और समाज तथा देश के लिए लाभकारी और मंगलकारी हो। यह समय प्रबंधन (Time Management) का समय है, जिसमें हमें प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना है। हमें सभी प्रकार की चुनौतियों का लगन, श्रम और निष्ठा से सामना करते हुए एक ऐसा शैक्षिक माहौल कायम करना है, जिससे व्यक्तित्व और समाज का विकास संभव हो। आज व्यवसायिक पाठ्यक्रम (Vocational courses) और रोजगारपरक पाठ्यक्रम (Job oriented courses) अधिक उपयोगी है, क्योंकि रोजगार की इनमें अधिक संभावनाएं है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर हमें अधिक ध्यान देना होगा, जिससे हमारे छात्रों को रोजगार उपलब्ध हो सके। झारखण्ड में नये उद्योग स्थापित होंगे, वहाँ कार्य करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षित प्रशिक्षित युवक—युवतियों की आवश्यकता होगी। व्यवसायिक और रोजगारन्मुख्य पाठ्यक्रमों के जरिये ही हमें नयी नौकरियाँ प्राप्त होंगी, पुरानी नौकरियों के स्थान पर अब अनेक

प्रकार की नयी नौकरियाँ है। हमारे छात्रों/छात्राओं को उसके लिए अपने आप को तैयार करना होगा।

शिक्षा का मूल्य और नैतिकता से संबंध सदैव बना रहेगा। वास्तविक शिक्षा किसी को मूल्यरहित और अनैतिक नहीं बनाती है। शिक्षित समुदाय ही किसी भी समाज का पथ–प्रदर्शक होता है। समाज का नेतृत्व करने के लिए उच्चतर मूल्यों का निर्वाह करना आवश्यक है। आप जिस किसी भी क्षेत्र का चयन करें, आपको उस क्षेत्र में सर्वोत्कृष्टता प्राप्त करनी है और यह केवल श्रम और लगन से संभव है। यह श्रम और लगन छात्र और अध्यापक दोनों के लिए जरूरी है। उच्च शिक्षा का संबंध उत्कृष्ट शिक्षा से है और यही शिक्षा उत्कृष्ट समाज का निर्माण भी करती है। आज शिक्षा की गुणवता (Quality) पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। शोध का स्तर हमें ऊँचा उठाना होगा, केवल मिहनत ही नहीं विजन से भी काम लेना होगा और शिक्षण संस्थाओं में सही अर्थों में कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी। यह सैटलाईट युग है और हमें नयी उड़ानें भरनी होगी।

राँची विश्वविद्यालय के छात्रों और अध्यापकों से इस नये राज्य को सर्वाधिक उम्मीदें हैं। हमें अपने समाज की उम्मीदों पर खरा उतरना होगा और एक साथ अपना तथा अपने राज्य और देश का कल्याण करना होगा। राँची विश्वविद्यालय में ललिता प्रसाद विद्यार्थी, इनायत अहमद, कामिल बुल्के, अमर कुमार सिंह, दिनेश्वर प्रसाद आदि अनेक ऐसे शिक्षक हुए हैं, जिन्होंने इसे गरिमा प्रदान की है। आज के नये माहौल में इस विश्वविद्यालय

को गरिमा प्रदान करनेवाले छात्रों और अध्यापकों की संख्या और अधिक बढ़ानी चाहिए।

वैज्ञानिक संस्कृति और तकनीकी संस्कृति के इस युग में जो नयी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई है, उन्हें हमें समझना चाहिए। आज आवश्यकता प्राचीन और नवीन के बीच एक सहयोगी और सार्थक संबंध स्थापित करने की है। शिक्षा का एक साथ सामाजिक, नैतिक और व्यवसायिक उपयोगी पक्ष है। इनमें से किसी को पूर्णतः स्वीकारने और अस्वीकारने का प्रश्न नहीं है, प्रश्न सुन्दर और सार्थक समन्वय का है, भौतिक संपदा और बौद्धिक संपदा का है। हमें अपनी बौद्धिक संपदा बढ़ानी है और मात्र अतीत के गुणगान से यह हासिल नहीं किया जा सकता। यह सच है कि जीवन व्यापार और व्यवसाय नहीं है, पर यह भी सच है कि आज व्यवसाय और व्यापार का क्षेत्र बड़ा है। अब प्रबंधन (Management) के पाठ्यकमों में कविता और संगीत जैसे विषय रखे जा रहे हैं। पुराने और नये सुर मिलकर ही वैसे नये सुर बनेंगे, जो हमारे जीवन और समाज के लिए अधिक उपयोगी हो।

विश्वविद्यालय बौद्धिक स्वतंत्रता का मुख्य क्षेत्र है। ज्ञान के इस स्वतंत्र परिसर में सभी प्रकार की ध्वनियों और आवाजों का स्थान है। बौद्धिक स्वतंत्रता से जीवन संवाद कायम रहता है। यह संवाद सामाजिक समरसता और लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी है। विश्वविद्यालय में ही एक खुले, स्वतंत्र मानस का निर्माण संभव है। इसके लिए छात्रों और अध्यापकों को अपना मानस बदलना होगा और एक सकिय संवादी मानस कायम करना

होगा। आज विश्वविद्यालय को एक साथ सूचना केन्द्रों और ज्ञान केन्द्रों में बदलकर ही हम आगे हो सकते हैं। यह समय एक साथ झारखण्ड, भारत और विश्व–ग्राम (Global Village) के नागरिक होने का समय है। इसके लिए अगर एक ओर संकीर्णताएँ छोड़नी होंगी, तो दूसरी ओर नये–नये क्षेत्रों की ओर उत्साह के साथ आगे बढ़ना होगा।

झारखण्ड में क्षमताओं और संभावनाओं की कमी नहीं है। हमारे छात्रों को दिशा प्रदान करनेवाली संस्थाओं की जरूरत है। संस्थाओं और वहाँ कार्यरत अध्यापकों को इस दिशा में प्रयत्न करना होगा। भविष्य को देखकर पाठ्यक्रम तय करने होंगे और पुराने या बेसिक पाठ्यक्रमों की कीमत पर नये पाठ्यक्रम नहीं बनाने होंगे। विश्वविद्यालय को रोजगारन्मुखी शिक्षा पर ध्यान देते हुए भविष्य का एक उपयोगी और सार्थक पाठ्यक्रम तैयार करना होगा और इसके लिए विशेषज्ञों की तलाश भी करनी होगी। विश्वविद्यालय की स्वायतता पर किसी प्रकार का प्रहार और आघात नही होना चाहिए और हमें सदैव विश्वविद्यालय की स्वायतता (Autonomy) बरकरार रखनी होगी। एक स्वायत विश्वविद्यालय ही नये स्वप्न और विजन (Vision) से युक्त होकर अपने दायित्व का निर्वाह कर सकता है।

भूमंडलीकरण (Globalisation) ने हमें नए अवसर प्रदान किए हैं और नयी चुनौतियाँ भी दी है। इस अवसर का लाभ हमें उठाना चाहिए और नयी चुनौतियाँ को स्वीकारना भी चाहिए। समय के अनुसार अपने को बदलकर और नयी चुनौतियाँ स्वीकार

कर हम आगे बढ़ेगे और अपने साथ समाज के भविष्य का निर्माण करेंगे।

दीक्षान्त समारोह का अवसर छात्रों/छात्राओं के लिए एक अविस्मरणीय अवसर होता है। वे डिग्रियाँ लेकर कर्म–क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। उनके समक्ष उनका भविष्य खड़ा रहता है। डिग्रियाँ प्राप्त करने से शिक्षा का समापन नहीं होता अपितु एक नयी यात्रा का आरंभ होता है। पूरी गति और वेग के साथ, विवेक और समझदारी के साथ वे अपना और समाज का विकास करें, यही हमारी मंगलकामना है।

जय हिन्द!

जय झारखण्ड!